# भारतीय संस्कृति तथा मानव मूल्य

**डॉ. जोगेंद्रसिंह बिसेन,**
प्रधानाचार्य
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर.

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। भारतीय संस्कृति के पश्चात् जगत् में कई संस्कृतियों का उदय हुआ और समय के साथ काल के प्रवाह में वे अस्तमान हुई। कहा जाता है कि ग्रीक देश के गौरव रवि की छाया जगत् की समस्त भोग्य, वांछनीय वस्तुओं पर पड़ती किन्तु आज ग्रीकों का नामोनिशान नहीं रहा। ग्रीकों की देवता ज्यूपिटर के मंदिर का नाम था कॅपिटल। इसी आधार पर जिस पर्वत पर मंदिर बना था उसे कॅपिटोलियन पर्वत कहा गया। वे कॅपिटोलियन पर्वत आज भग्न अवशेषों के रूप में पड़े हैं। कहा जाता है कि

**"युनानी मिस्त्र रोमां सब मिट गये जहाँ से**
**फिर भी बाकी रहा है नामो निशां हमारा**
**कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी**
**सदियों दौरे रहा दुश्मन जहाँ हमारा"**

भारतीय परंपरा, सभ्यता एवं संस्कृति के संबंध में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं-

**"हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,**
**ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?**
**भगवान् की भव - भूतियों का यह प्रथम भंडार है,**
**विधि ने किया नर - सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।"**[१]

जिस - जिस विद्वान को जीवन के तथ्य ज्ञात हुए उन विद्वानों ने उन तत्त्वों का बयान किया। जो मानव मूल्यों के रूप में समाज की कसौटियों पर खरे उतरे। कट्टरता को अस्वीकार करते हुए जगत के समस्त सत् विचारों को स्वीकार करनेवाली यह संस्कृति है। यह भी इसका एक मानव मूल्य है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार मानवता है। इस संस्कृति में कहा गया -

**"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।"**[२]

अर्थात जगत् के सभी अच्छे विचार, श्रेष्ठ सिद्धांत हमारी ओर आएँ। हम उन अच्छे विचारों को अपनाएँगे। ग्रहणशीलता भी भारतीय संस्कृति की विशेषता है। औरों के श्रेष्ठ, विधायक, अच्छे सिद्धांतो का भारतीय संस्कृति ने स्वीकार किया है। परिवर्तनशीलता भी भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

जगत् की समस्त जातियों तथा संस्कृतियों, पंथों के प्रचार और प्रसार की प्रक्रिया में शस्त्र का सहारा लिया गया। औरों के रक्तों को बहाकर ही इनका प्रचार और प्रसार हुआ। किन्तु "अहिंसा परमो धर्माः" का पुरस्कार करनेवाली भारतीय संस्कृति में यह हिंसा की प्रवृत्ति दिखाई नहीं देती। यह मानवजाति केलिए एक महत्वपूर्ण मानव मूल्य है। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, महात्मा गांधी ऐसे कई महापुरुषों ने अहिंसा के सिद्धांतो को अपनाया है। यह "अहिंसा परमो धर्माः" का सिद्धांत मानव मूल्य दर्शानेवाला भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख सिद्धांत है। कुछ लोग हमारे अहिंसा के सिद्धांत को हमारी कमजोरी मानते हैं किन्तु यह गलत है। सामर्थ्य संपन्न समाज के अंहिसा के तत्वज्ञान का ही महत्व है और इसका हमने जगत् को कई बार अनुभव कराया है। सत्रह बार मुहम्मद घोरी को युद्ध में परास्त करने के बाद पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद घोरी को छोड़ दिया। १९७१ में बांग्लादेश की आजादी के समय

हमने पाकिस्तान के ९० हजार पाकिस्तानी सिपाही बंदी बनाए किन्तु बाद में उन्हें बाईज्जत छोड़ दिया। दुनिया में ऐसा कोई मुल्क नहीं है। जगत् का इतिहास इस बात केलिए साक्षी है कि हमने कभी किसी राष्ट्रपर पहले आक्रमण नहीं किया। इसीलिए कभी हरिओम पवार अपनी कविता में कहते हैं -

**"मेरे भारत का कोई भी हमलावर इतिहास नहीं,**
**और किसी का पास हमारे मुठ्ठीभर आकाश नहीं।"**[३]

"सर्व पंथ समभाव" यह भी भारतीय संस्कृति में स्थित मानवमूल्य है। आज दुनिया में जाति तथा पंथ के नाम पर भयंकर संघर्ष है। जिससे मनुष्यता को क्षति पहुँच रही है। ऐसी स्थिति में भारतीय संस्कृति में व्याप्त "सर्व पंथ समभाव" यह मानवमूल्य अपने महत्व को सिद्ध करता है। भारतीय संस्कृति कहती है - "एक सत् विप्राः बहुधा वदन्ति" शैव शिव के रूप में, वैष्णव विष्णु के रूप में, वेदान्ति ब्रह्म के रूप में, बौद्ध बुद्ध के रूप में, जैन अर्हंत के रूप में, प्रमाण-पटू नैयायिक सृष्टिकर्ता के रूप में और मीमांसक कर्म के रूप में अपने अराध्य को स्वीकार कर आराधना करते हैं। परंतु ये सभी एक हैं यह सिद्धांत भारतीय संस्कृति प्रतिपादित करती है। शिवमहिम्न स्तोत्र में कहा गया - "रूचिनां वैचित्र्याद् ऋजु कुटिलनानापथजुषाम्" जैसे नदियों के प्रवाह भिन्न - भिन्न मार्ग से होकर अंतिमतः समंदर तक जाते हैं उसी प्रकार परमात्मा को स्मरण करने के सभी मार्ग अंतिमतः उस परमात्मा तक जाते हैं। भारतीय संस्कृति में यह एक श्रेष्ठ मानवमूल्य है।

भारतीय संस्कृति "वसुधैव कुटुंबकम्" के सिद्धांत को मानती है और उस मार्ग का अनुसरन करती है। यह मानवमूल्य भी वर्तमान समय में समग्र जगत् केलिए अनिवार्य और आवश्यक है। भारतीय संस्कृति सभी को सुखी एवं स्वास्थ्य संपन्न देखना चाहती है। भारतीय संस्कृति में कहा गया सिद्धांत अपने महत्व को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति में कहा गया "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" सभी सुखी रहें, सभी निरामय रहें। भीक न देनेवाले समाज के संबंध में भी ज्ञानेश्वर बुरा नहीं कहते ज्ञानेश्वरी लेखन के पश्चात् वे पसायदान लिखते हैं जिसमें उन्होंने सभी का मंगल हो यह कामना की।

"आता विश्वात्मके देवे येणे वागयज्ञे तोषावे
तोषोणी मज द्यावे पसायदान हे
x x x x
x x x x
जो जे वांछिल तो ते लाहो प्राणिजात।"

भारतीय संस्कृति का यह भवन त्याग पर खड़ा है, भोगवाद को इसमें कोई स्थान नहीं है। मुनि शंख हो या मुनि लिखित, शिबि हो या राजा हरिश्चंद्र, दधिचि हो या कर्ण, भगवान बुद्ध हो या भगवान महावीर सभी में त्याग का दर्शन होता है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में -

**"आमिष दिया अपना जिन्होंने श्येन भक्षण के लिए,**
**जो बिक गये चांड़ाल के घर सत्य रक्षण के लिए!**
**दे दी जिन्होंने अस्थियाँ परमार्थ - हित जानी जहाँ,**
**शिबि, हरिश्चंद्र, दधिचि - से होते रहे दानी यहाँ"**[४]

त्याग यह भारतीय संस्कृति का अनमोल गहना है। इसलिए यह संस्कृति कहती है - "वाच काछ मन निश्चल राखे पर धन नव झाले हाथ रे।"

उपनिषद की एक कथा है, एक सन्यासी था। वह प्रातः समय स्नान केलिए नदी पर जा रहा था। रास्ते में उसे एक सुवर्ण मुद्रा रेत पर पड़ी नजर आयी। साधु ने सोचा यह सुवर्ण मुद्रा किसकी होगी? और जिसकी भी होगी

उसे सुवर्ण मुद्रा खो जाने का कितना दु:ख हो रहा होगा। साधु ने चारों और देखा कि कोई सुवर्ण मुद्रा खोज रहा हो तो उसे यह सुवर्ण मुद्रा दुँ और मैं स्नान केलिए आगे निकलुँ। किन्तु साधु को सुवर्ण मुद्रा की खोज करनेवाला कोई नजर नहीं आया। उसी समय एक डोम अपने भैंसे पर चमड़े की थैली डाल पानी लेकर आता हुआ दिखाई दिया। साधु के मन में विचार उत्पन्न हुआ यदि डोम की नजर इस सुवर्ण मुद्रा पर पड़ेगी तो वह सुवर्ण मुद्रा लेगा जिसके कारण डोम के हाथों पाप कर्म होगा साथ ही जिसकी सुवर्ण मुद्रा है उसे सुवर्ण मुद्रा नहीं मिलेगी। क्या करें? स्वयं भी नहीं ले सकता। यह सोच साधु सुवर्ण मुद्रा पर पैर रखकर खड़ा होगया और सुवर्ण मुद्रा के मालिक की प्रतिक्षा करने लगा। वह सोच रहा था सुवर्ण मुद्रा का असली मालिक सुवर्ण मुद्रा की खोज करते हुए यहाँ आये तो मैं उसे यह सुवर्ण मुद्रा दुँगा और स्नान केलिए निकल पडुँगा। धीरे - धीरे समय आगे बढ़ने लगा इसबीच डोम पानी लेकर नदी से गाँव में गया और जिसके घर पानी देना था उसे पानी देकर लौट आया। दोपहर का समय था, धूप तेज थी, रेत तप रही थी डोम ने देखा सुबह से देख रहा हूँ यह साधु नंगे पैर तपती रेत पर खड़ा है। डोम ने अपने भैंसे को रोका साधु के पास गया, नमस्कार किया और पूछा महाराज आप यह घोर तपस्या क्यों कर रहे हो? मैं सुबह से देख रहा हुँ आप नंगे पैर इस रेत पर खड़े हो अब दोपहर का समय है इस तपती रेत पर बगैर पैरों की हरकत किए आप खड़े हो। किस बात केलिए आप यह तपस्या कर रहे हो? साधु के सामने प्रश्न था सच कहुँ तो डोम को बुरा लगेगा और झूठ कहुँ तो स्वयं को पाप लगेगा। इसलिए उसने डोम से कहा मैं सच नहीं कह सकता, सच कहुँ तो आप बुरा मानोगे और झूठ कहुँ तो मेरे हाथों पाप होगा। इस पर डोम ने कहा महाराज आप योगी हो, सन्यासी हो जो सच है वही बताइये। इसपर साधु ने कहा कि मैं सुबह स्नान केलिए यहाँ पहुँचा यहाँ एक सुवर्ण मुद्रा मुझे दिखाई दी मैने सुवर्ण मुद्रा के मालिक की खोज की मुझे कोई नजर नहीं आया इसबीच आप नजर आये मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि आप सुवर्ण मुद्रा देखेंगे तो सुवर्ण मुद्रा लेने का मोह आपके मन में उत्पन्न होगा और आपके हाथों एक पाप कर्म होगा। साथ ही जिसकी सुवर्ण मुद्रा है उसे भी नहीं मिलेगी। इसलिए मैं सुवर्ण मुद्रा पर पैर देकर खड़ा हूँ और सुवर्ण मुद्रा के असली मालिक की प्रतिक्षा कर रहा हूँ। जैसे ही वह आएगा यह सुवर्ण मुद्रा उसे देकर मैं यहाँ से प्रस्थान करूंगा। यह सुन डोम के चेहरे पर हलकी सी मुस्कुराहट दिखाइ दी उसने कहा महाराज मैं जाति से डोम हूँ मेरे पिता, दादा, परदादा यही काम करते थे मैं भी वहीं काम करता हूँ यहाँसे पानी लेकर गाँव जाता हूँ, गाँव के कुछ घरों में पानी देता हूँ उसके बदले में मुझे कुछ पैसे मिलते हैं। जिसमें मैं, मेरी पत्नी, मेरे बच्चे किसी प्रकार अपनी जीविका चलाते हैं। कभी दो समय की रोटी मिलती है कभी एक समय भोजन कर रात में पानी पीकर ही हमें सोना पड़ता है। आपकी जानकारी केलिए बताता हूँ पिछले बीस वर्षों से मैं यह काम करता हूँ और पिछले चार दिनों से यह सुवर्ण मुद्रा यहाँ पड़ी है अर्थात् एक साधु, योगी, तपस्वी को ज्ञान देनेवाला डोम इस देश में पैदा होता था यह इस संस्कृति की विशेषता है।

हर जीव में परमात्मा का अंश यहाँ देखा जाता है। जीव तो क्या "पौधे में भी परमात्मा होता है" यह धारणा इस संस्कृति की है।

भारतीय संस्कृति में नारी को श्रेष्ठ स्थान दिया गया है। "नारी तू नारायणी" कहा गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को उच्च स्थान दिया गया है। मनुने कहा है -

**"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:**
**यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ।"**[५]

अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता रमण करते हैं। नारी को शक्ति के रूप में स्वीकार किया है। नारी पुरुष की सबसे बड़ी शक्ति है। नारी पुरुष की प्रेरणा है। नारी पुरुष को ममता और स्नेह प्रदान करती है।

पर स्त्री को माता के रूप में स्वीकार करनेवाली भारतीय संस्कृति का जगत् में अपना विशेष स्थान है। इन मानवमूल्यों के बलपरही भारतीय संस्कृति ने अपना विशेष स्थान निर्माण किया है।

भारतीयों ने ही नहीं अपितु विदेशी विद्वानों भी भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता को स्वीकार किया है। मैक्समूलर ने कहा है - **"जबतक भूतल पर नदियाँ और पर्वत रहेंगे, तबतक लोकों में ऋग्वेद की महिमा का प्रचार होगा।"**[६]

अत: निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं -

०१. भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है।

०२. सत्यमेव जयते, अहिंसा परमो धर्मा:, सर्व पंथ समभाव, वसुधैव कुटुंबकम्, एक सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:, सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया: जैसे श्रेष्ठ सिद्धांतों को भारतीय संस्कृति ने समाज में प्रस्थापित किया है। जो मानवमूल्य के रूप में स्वीकार किये गए हैं।

०३. जगत् के समस्त श्रेष्ठ विचारों का स्वीकार भारतीय संस्कृति ने किया है।

०४. भारतीय संस्कृति का मूल आधार मानवता है।

०५. परिवर्तनशीलता भी भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

०६. नारी को सम्मान देना यह भी भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ मानवमूल्य है।

इन सिद्धांतों के बलपर भारतीय संस्कृति ने जगत् में अपना स्थान निर्माण किया है।

**संदर्भ ग्रंथ सूचि:**

०१. भारत - भारती - मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ क्र. १२
०२. ऋग्वेद - सूक्त नवासी, प्रथम मंत्र, प्रकाशक दयानंद संस्थान, नयी दिल्ली, पृष्ठ क्र. ११३
०३. मंचीय कवि - हरिओम पवार की कविता
०४. भारत - भारती - मैथिलीशरण गुप्त, पृष्ठ क्र. १६
०५. मनुस्मृति - सं. राजवीर शास्त्री, तृतीय अध्याय, पृष्ठ क्र. २५७.
०६. भारतीय संस्कृति दिग्दर्शन - ले. श्यामचंद्र कपूर, पृष्ठ क्र. ३१.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com